JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अयोध्या जनपद के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पूर्व माध्यमिक स्तर पर पढ़ने वाले छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

प्रदीप कुमार मौर्य

शोध छात्र (शिक्षाशास्त्र)

शिक्षा विभाग -अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, मध्य प्रदेश ।

सार- अध्ययन का शीर्षक ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पूर्व माध्यमिक स्तर पर पढ़ने वाले छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन है। एक उद्देश्य के रूप में, शैक्षणिक उपलब्धि के लिए शहरी और ग्रामीण छात्रों की प्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। शोध समस्या की प्रकृति पर विचार करते हुए शोधकर्ता ने वर्णनात्मक शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। जनसंख्या के रूप में अयोध्या जिले के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 08 में पढ़ने वाले छात्रों को जनसंख्या के रूप में माना जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में अयोध्या जिले के 4 पूर्व माध्यमिक विद्यालयों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया तथा उनमें पढ़ने वाले 150 विद्यार्थियों का चयन ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों से सरल यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। डॉ० टी० एस० आर० एस० शर्मा द्वारा विकसित 'शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण' में कुल 38 प्रश्न हैं। अंत में, ग्रामीण कस्बों में पूर्व-माध्यमिक स्तर पर पढ़ने वाले लड़कों और लड़कियों के बीच शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

की वर्ड- ग्रामीण, शहरी, माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा |

परिचय-

मानव जीवन परमात्मा की सर्वोत्तम रचना है। जिसके जैविक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलू हैं जहां भोजन और प्रजनन जैविक जीवन, सीखने, रखरखाव और विकास के लिए आवश्यक हैं। सांस्कृतिक जीवन के लिए, पौधों और जानवरों को जैविक रूप से समान कहा जा सकता है, लेकिन सामाजिक या सांस्कृतिक जीवन केवल मनुष्य में ही पाया जाता है । जॉन डी वी ने कहा कि भोजन की तरह प्रजनन भी जैविक जीवन की एक आवश्यकता है। इसी प्रकार सामाजिक जीवन की शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति नवीन विचारों एवं जीवनशैली को अपना सकता है शिक्षा के माध्यम से वह अपनी मानसिक क्षमता और ज्ञान को बढ़ाना चाहता है ताकि वह प्रकृति को अपनी इच्छानुसार ढाल सके।

यह इस ज्ञान को भावी पीढ़ियों तक पहुंचाते हुए शाश्वत को नियंत्रित करना चाहता है। मानव का जीवन न केवल जैविक है बल्कि सामाजिक गतिविधियों से भी संचालित होता है। जहां जैविक कार्य विरासत में मिलते हैं, जबकि शिक्षा सामाजिक विरासत से निर्देशित होती है, वस्तुतः आनुवंशिकी इंसानों और पशुओं में कोई अंतर नहीं होता हैं इसलिए हम कह सकते हैं कि यह सामाजिक है। यह विरासत उसे ब्रह्मांड को नियंत्रित करने की क्षमता देती है। इस तरह शिक्षा मानव जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

जॉन लॉक के अनुसार, शिक्षा मनुष्य का उसी प्रकार विकास करती है जिस प्रकार कृषि पौधों का विकास करती है।

प्रेरणा के बिना प्रेरित व्यक्ति कुछ भी नहीं कर सकता। प्रेरणा ध्यान और आकर्षण आकर्षित करने की कला है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति में कुछ करने की इच्छा और जिज्ञासा पैदा होती है, यानी मानव व्यवहार नियमित रूप से कुछ उत्तेजनाओं द्वारा व्यक्त और परिवर्तित होता है, प्रेरणा सीखने का एक अनिवार्य हिस्सा है। कुछ हद तक, यह बच्चे को कोई भी गतिविधि सीखने के लिए प्रेरित कर सकता है। . प्रेरणा आंतरिक प्रेरणा और बाह्य प्रेरणा दोनों हो सकती है। प्रेरणा के संबंध में, ड्रेवर ने लिखा: "प्रेरणा एक प्रभावी कार्यात्मक तत्व है जो सचेतन है या अनजाने में किसी के व्यवहार को पूर्व निर्धारित परिणाम या लक्ष्य की ओर निर्देशित करना कर पाना प्रेरणा एक व्यक्ति के भीतर भावनात्मक उत्तेजना और भविष्यसूचक उद्देश्य की विशेषता वाली ऊर्जा का परिवर्तन है। इस संबंध में डी.एस. यादव प्रेरणा को केवल आंतरिक प्रेरणा मानते थे।

एच.डी यादव के अनुसार, "मनोवैज्ञानिक अर्थ में प्रेरणा का सीधा सा अर्थ है आंतरिक प्रेरणा।" जिस पर हमारा व्यवहार आधारित होता है. बाहरी उत्तेजनाओं का कोई मनोवैज्ञानिक महत्व नहीं है यह कोई दिया हुआ नहीं है।"

मनुष्य में भूख, प्यास, काम, नींद और आराम जैसी जन्मजात प्रेरक प्रवृत्तियाँ होती हैं। इनके बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। मनुष्य अपनी बुद्धि से कुछ भी कर सकता है। व्यक्तिगत प्रेरणाएँ जैसे रुचि, खुशी, जीवन लक्ष्य आदि। समुदाय, आत्म-सम्मान, युद्ध और प्रेम जैसी सामाजिक प्रेरणाओं का पता लगाया जाता है। माध्यमिक स्तर पर छात्रों को अर्जित प्रेरक तत्वों को विकसित करने की आवश्यकता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता ऐसी प्रेरणाओं से प्रेरित होती है।

मनुष्य हर दिन अपने घर, परिवार, समाज और अपने आस-पास के लोगों की सफलता देखता है, अपने सुखी और समृद्ध वातावरण से वह कुछ न कुछ सीखता है, यही सीख उसे अपनी सफलता के लिए प्रेरित करती है। पढ़ाई के दौरान जब कोई बच्चा अपने आसपास के लोगों को पढ़ाई में सफल होते देखता है तो वह उनके जैसा बनने की कोशिश करता है और इसके लिए वह तरह-तरह की गतिविधियां और प्रयास करता रहता है। शिक्षा से संबंधित ये सभी कार्य व्यक्ति शैक्षिक प्रेरणा से ही कर सकता है। इसे ही हम शैक्षणिक प्रेरणा कहते हैं। यह प्रेरणा उन्हें अपने शैक्षणिक कार्य को अधिक प्रयास, समर्पण और दृढ़ता के साथ आगे बढ़ाने के लिए पर्याप्त ताकत देती है।

पारिवारिक वातावरण और माता-पिता के साथ-साथ उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति का बच्चों की शैक्षणिक प्रेरणा पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। जैसा कि कहा गया है, परिवार बच्चों की पहली पाठशाला है और माँ उनकी पहली शिक्षक है। इसलिए परिवार और माँ की शैक्षिक प्रेरणा इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव होते हैं। प्रारंभिक अध्ययन में, मौला, जे.एम. और अन्य। (2010) अध्ययन से पता चलता है कि छात्रों के घरेलू वातावरण के छह आयाम हैं पिता का व्यवसाय, माँ का व्यवसाय, चौहान और खान (2010) ने पिता की शैक्षिक उपलब्धि, माँ की शैक्षिक उपलब्धि, परिवार के आकार और माँ की घरेलू स्कूली शिक्षा छूट के बीच एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक संबंध पाया। चौहान और खान (2010) ने पाया कि माता-पिता के समर्थन, होमवर्क और शैक्षणिक गतिविधियों का छात्रों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा .कर रहा हूँ. शैक्षिक उपलब्धि। . व्यास, भगवती लाल और शर्मा, मुकेश (2014) ने निष्कर्ष निकाला कि अंग्रेजी-हिंदी माध्यम के ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के

सीखने के व्यवहार, कक्षा के व्यवहार और समय प्रबंधन आयामों का घरेलू वातावरण के साथ महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण संबंध है। एक सकारात्मक संबंध देखा गया । इसमें स्कूल के माहौल के साथ-साथ उनके शिक्षकों की भी भूमिका होती है। अल्ताफ लिंडे और मेसन (2007) अध्ययन में पाया गया कि उनकी कक्षा के छात्रों में शैक्षणिक उपलब्धि के लिए अन्य कक्षाओं के छात्रों की तुलना में अधिक प्रेरणा थी, जहां माहौल अच्छा था और शिक्षकों का छात्रों के प्रति अच्छा रवैया था, अठवाल, राहुल (2017) ने निष्कर्ष निकाला कि शिक्षकों की भूमिका मुख्य रूप से मनोवैज्ञानिक है। ? शिक्षक को कक्षा में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, प्रेरणाओं और दृष्टिकोणों के बारे में पता होना चाहिए। जिस हद तक शिक्षक छात्रों को समझ पाते हैं, उनका शिक्षण प्रभावी हो जाता है और छात्र उनके शिक्षण से लाभान्वित होते हैं। इसलिए, एक सफल शिक्षक ऐसे छात्र की मदद करता है और उसकी समायोजन समस्या को हल करने का प्रयास करता है। इसलिए, वर्तमान परिदृश्य में, शैक्षणिक सफलता की प्रेरणा शारीरिक, मानसिक और व्यक्तित्व से संबंधित है। इसका भावनात्मक, सामाजिक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इसीलिए शोधकर्ता ने शहरी और ग्रामीण इलाकों के छात्रों पर यह अध्ययन किया है।

समस्या का विवरण

अयोध्या जनपद के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य -

1. ग्रामीण-शहरी क्षेत्रों के पूर्व-माध्यमिक छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के निर्धारकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. ग्रामीण-शहरी क्षेत्रों के पूर्व-माध्यमिक छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के निर्धारकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में पूर्व-माध्यमिक छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि के निर्धारकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

वर्तमान अध्ययन निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण करता है:

1. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में माध्यमिक स्तर पर पढ़ने वाले छात्र पूर्व-माध्यमिक स्तर पर शिक्षा प्राप्त करते हैं शैक्षणिक उपलब्धि के लिए प्रेरणा में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थी पूर्व-माध्यमिक स्तर पर शिक्षा प्राप्त करते हैं शैक्षणिक उपलब्धि के लिए प्रेरणा में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
3. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में माध्यमिक स्तर पर पढ़ने वाली लड़कियाँ पूर्व-माध्यमिक स्तर पर पढ़ती हैं। शैक्षणिक उपलब्धि के लिए प्रेरणा में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

शोध विधि- शोध समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने वर्णनात्मक शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

जनसंख्या -

जनसंख्या अयोध्या जिले के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 08 में पढ़ने वाले छात्रों की जनसंख्या है।

न्यादर्श –

वर्तमान अध्ययन में अयोध्या जिले के 4 पूर्व माध्यमिक विद्यालयों को स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण विधि द्वारा नमूने के रूप में चुना गया और उनमें पढ़ने वाले 150 छात्रों को ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से सरल यादृच्छिक विधि द्वारा चुना गया था।

उपकरण-

टी०आर० शर्मा द्वारा विकसित 'शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण' का उपयोग किया जाता है। कुल 38 प्रश्न हैं.

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ:

डेटा संग्रह के माध्यम से गणना के बाद बनाई गई शून्य परिकल्पना का परीक्षण करना टी-अनुपात तकनीक लागू की गई है।

आँकड़ों का विश्लेषण और व्याख्या

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में पूर्व-माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि की प्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

<u>तालिका संख्या – 1</u>

पूर्व-माध्यमिक स्तर पर पढ़ने वाले ग्रामीण और शहरी पूर्व-माध्यमिक छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा से जुड़े अंकों का माध्य, मानक विचलन और टी-अनुपात

क्र०स०	क्षेत्र	विद्यार्थियो की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी परीक्षण	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण	65	25.22	4.85	1.36	0.05
2.	शहरी	85	28.22	4.25		

तालिका के अवलोकन से पता चलता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण और शहरी पूर्व-माध्यमिक छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के औसत मूल्यों के बीच अंतर के लिए टी – अनुपात का मान 1.36 है जो कि सार्थक स्तर .05 तथा मुक्तांश 150 के सारणी मान 1.99 से कम है अर्थात् मध्यमानों में असार्थक अन्तर है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात् माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. **ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के पूर्व - माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के लिए शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन।**

तालिका नं. 2

पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, तथा टी-अनुपात

क्र०स०	क्षेत्र	विद्यार्थियो की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण	42	24.59	4.590	3.17	
2.	शहरी	38	27.87	4.443		0.05

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा के मध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात का मान 3.17 जो कि सार्थक स्तर .05 तथा मुक्तांश 74 के सारणी मान 2.00 से अधिक है अर्थात् मध्यमानों में सार्थक अन्तर है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त होती है अर्थात पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा सार्थक अन्तर है अर्थात् शहरी क्षेत्रों के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की अपेक्षा उच्च है।

3. पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

तालिका सं० – 3

पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, तथा टी- अनुपात

क्र०स०	क्षेत्र	विद्यार्थियो की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण	39	28.29	5.06	1.15	0.05
2.	शहरी	46	24.04	3.60		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा के मध्यमानों के अन्तर का टी- अनुपात का मान 1.15 है जो कि सार्थक स्तर .05 तथा मुक्तांश 72 के सारणी मान 2.00 से कम है अर्थात् मध्यमानों में असार्थक अन्तर है अतः शून्य

परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात् पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष-

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये-

1. पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

2. पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर है अर्थात् शहरी क्षेत्रों के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की अपेक्षा उच्च है।

3. पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

●निष्कर्षतः

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया समान शोध काला, पी. चन्द्रा एवं शिरलिन, पी. (2017) ने अध्ययन में इंगित किया कि लिंग, कॉलेज के क्षेत्र, विद्यार्थियों के निवास स्थान एवं कॉलेज के प्रकार के आधार पर विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर है समान शोध अध्ययन सिंह एवं बघेल (2017) ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. साराह ई० अलथाफ, क्रिस्टेन जे० लिण्डे जॉन मासन, (2007) 'हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स एकेडमिक एचीवमेन्ट स्टूडेण्ट मोटीवेशन, क्लासरूम कम्न्यूकेशन, डिजरटेशन थीसिस ऑन लाइन सर्मथन ।
2. उठवाल, राहुल (2017). एक शिक्षक की प्रेरणा, उत्प्रेरक के रूप में चुनौतियाँ एवं समाधान, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ हिन्दी रिसर्च, वॉल्यूम – 3, इश्शू – 5, पृ0 06-08
3. काला, पी. चन्द्रा एवं शिरलिन, पी. (2017). ए स्टडी ऑन एचिवमेण्ट मोटिवेशन एण्ड सोशियो- इकोनॉमिक स्टेट्स ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट्स इन तिरूवल्ली डिस्ट्रिक, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च ग्रन्थालय, वॉल्यूम – 5, इश्शू – 3, पृ0 57 – 64
4. चोहान एवं खान (2010). इम्पैक्ट ऑफ पैरेन्टल सर्पोट ऑन द एकेडमिक परफार्मेन्स एण्ड सेल्फ-कन्सेप्ट ऑफ द स्टूडेन्ट, जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड रिफलेक्शन इन एजुकेशन, वॉल्यूम -4, नं0 1, पृ० 14-26
5. मौला, जे. एम. (2010). ए स्टडी ऑफ द रिलेशनशिप बिटविन एकेडमिक एचिवमेण्ट मोटिवेशन एण्ड होम इन्वायरमेण्ट एमंग स्टैडेड ऐट पीपुल्स एजुकेशनल रिसर्च एण्ड रिव्यूस, वॉल्यूम – 5 (5), पृ0 213-217
6. व्यास, भगवतीलाल एवं शर्मा, मुकेश (2014). अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के अधिगम व्यवहार का गृह वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का अध्ययन, इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल फॉर मल्टीडिस्पिलनरी स्टडीज, वॉल्यूम-1, इश्शू – 2, पृ02–5
7. सिंह एवं बघेल (2017). किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिस्पिलनरी एजुकेशन एण्ड रिसर्च, वॉल्यूम–2, इश्शू–5, पृ0 79–83